'शिव' ग्रन्थमाला ग्रन्थांक-५

श्रीनारायण कवचम्

द्रौपदीनाम्निभाषाटीकासहितम्



सम्पादक

आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्त मिश्र शास्त्री

प्रकाशक-ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर

फोन ६४६५० राजादरवाजा, वाराणसी। मूल्य २)

सङ्गणकसंस्करणं दासाभासेन हरिपार्षददासेन कृतम्

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतं

श्रीनारायणकवचम्

'द्रौपदी'-नाम्नि-भाषाटीका-सहितम्

•

अथ न्यासः

अङ्गन्यासः

ॐ ॐ नमः पादयोः । ॐ नं नमः जानुनोः । ॐ मों नमः ऊर्वोः । ॐ नां नमः उदरे । ॐ रां नमः हृदि । ॐ यं नमः उरसि । ॐ णां नमः मुखे । ॐ यं नमः शिरसि ।

करन्यासः

ॐ ॐ नमः दक्षिणतर्जन्याम् । ॐ नं नमः दक्षिणमध्यमायाम् । ॐ मों नमः दक्षिणाऽनामिकायाम् । ॐ भं नमः

पाठकर्त्ताको श्रीमन्नारायण भगवान्को नमस्कार कर निम्नलिखित प्रकारसे न्यास करना चाहिए।

अङ्गन्यास—'ॐ नमः पादयोः' मन्त्रको पढ़कर दोनों पैरोंको स्पर्श करना चाहिए। 'ॐ नं नमः जानुनोः' इस मन्त्रसे दोनों घुटनोंका स्पर्श करना चाहिए। 'ॐ मों नमः ऊर्वोः' से दोनों जाँघ तथा 'ॐ नां नमः उदरे' से पेट, 'ॐ रां नमः हृदि' से हृदय और 'ॐ यं नमः उरसि' से छाती, ॐ णां नमः मुखे' से मुख तथा 'ॐ यं नमः शिरसि' से शिरका स्पर्श करना चाहिए।

करन्यास—'ॐ नमः दक्षिणतर्जन्याम्' से दाहिनी तर्जनी, 'ॐ नं नमः दक्षिणमध्यमायाम्' से दाहिनी मध्यमा अँगुली, 'ॐ मों नमः दक्षिणा-

दक्षिणकनिष्ठिकायाम् । ॐ गं नमः वामकनिष्ठिकायाम् । ॐ वं नमः वामानामिकायाम् । ॐ तें नमः वाममध्यमायाम् । ॐ वां नमः वामतर्जन्याम् । ॐ सुं नमः दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि । ॐ दें नमः दक्षिणाऽङ्गुष्ठाधःपर्वणि । ॐ वां नमः वामाऽङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि । ॐ यं नमः वामाङ्गुष्ठाधःपर्वणि ।

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ नमः हृदये । ॐ विं नमः मूर्धनि । ॐ षं नमः भ्रुवोर्मध्ये । ॐ णं नमः शिखायाम् । ॐ वें नमः नेत्रयोः । ॐ नं नमः सर्वसन्धिषु ।

ऽनामिकायाम्' से दाहिनी अनामिका, तथा 'ॐ भं नमः दक्षिणकनिष्ठिकायाम्' से दाहिनी हाथकी कानी अँगुली, 'ॐ गं नमः वामकनिष्ठिकायाम्' से बायें हाथकी कानी अँगुली, 'ॐ वं नमः वामानामिकायाम्' से बायें हाथकी अनामिका अँगुली, 'ॐ तें नमः वाममध्यमायाम्' से बायें हाथकी मध्यमा अँगुलीका स्पर्श करे । 'ॐ वां नमः वामतर्जन्याम्' से बायें हाथकी तर्जनी अँगुली तथा 'ॐ सुं नमः दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि' से अँगूठेकों छुए, 'ॐ दें नमः दक्षिणांगुष्ठाधःपर्वणि' से दाहिने हाथके अँगूठेका नीचे वाला पोर, 'ॐ वां नमः वामांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि' से बायें हाथ के अँगूठेके ऊपरी पोरको, 'ॐ यं नमः वामांगुष्ठाधःपर्वणि' से बायें हाथके अँगूठेका नीचेवाला पोरका स्पर्श करना चाहिए ।

विष्णुषडक्षरन्यास—'ॐ नमः हृदये' इस मन्त्रको पढ़कर हृदयका, 'ॐ विं नमः मूर्धनि' से शिरका, 'ॐ षं नमः भ्रुवोर्मध्ये' से भौंहोंका, 'ॐ णं नमः शिखायाम्' से शिखाका, 'ॐ वें नमः नेत्रयोः' से दोनों नेत्रोंका, 'ॐ नं नमः सर्वसन्धिषु' से कन्धा, केहुना, घुटना आदि अंगोंका स्पर्श करना चाहिए ।

दिग्बन्धः

ॐ मः अस्त्राय फट् प्राच्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् आग्नेय्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् दक्षिणस्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् नैर्ऋत्ये । ॐ मः अस्त्राय फट् प्रतीच्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् वायव्ये । ॐ मः अस्त्राय फट् उदीच्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् ऐशान्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वायाम् । ॐ मः अस्त्राय फट् अधरायाम् ।

ध्यानम्

ॐ उद्यत्कोटि-दिवाकराभमनिशं शङ्खं गदां पङ्कजम्
चक्रं बिभ्रतमिन्दिरावसुमती संशोभिपार्श्वद्वयम् ।
केयूराङ्गद-हार-कौस्तुभधरं पीताम्बरं कौस्तुभो-
द्दीप्तं विश्वंभरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्सचिह्नं भजे ॥

दिग्बन्ध—'ॐ मः अस्त्राय फट् प्राच्याम्' इस मन्त्रको पढ़कर पूर्वकी ओर चुटकी बजाये, 'ॐ मः अस्त्राय फट् आग्नेय्याम्' से अग्निकोणकी ओर 'ॐ मः अस्त्राय फट् दक्षिणस्याम्' से दक्षिणकोणकी ओर 'ॐ मः अस्त्राय फट् नैर्ऋत्ये' से नैऋत्यकोणकी ओर तथा 'ॐ मः अस्त्राय फट् प्रतीच्याम्' से पश्चिमकी ओर चुटकी बजावे, 'ॐ मः अस्त्राय फट् वायव्ये' से वायुकोणकी ओर, 'ॐ मः अस्त्राय फट् उदीच्याम्' से उत्तर की ओर, 'ॐ मः अस्त्राय फट् ऐशान्याम्' से ईशानकोणकी ओर, 'ॐ मः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वायाम्' से ऊपरकी ओर, 'ॐ मः अस्त्राय फट् अधरायाम्' से नीचेकी ओर चुटकी बजाना चाहिए।

ध्यान—'उद्यत्कोटि-दिवाकराभमनिशं' से 'श्रीवत्सचिह्नं भजे' तक श्लोक पढ़कर भगवान् नारायणका ध्यान करे। फिर 'यया गुप्तः सहस्राक्षः' (श्लोक १) से 'मृधेऽसुरान्' (श्लोक ४२) तक नारायण-कवचका पाठ करे ।

अथ नारायणकवचम्

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान् ।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् ॥ १ ॥
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम् ।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायाऽनुपृच्छते ।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु ॥ ३ ॥

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः ।
कृतस्वाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः ॥ ४ ॥

महाराज परीक्षित्ने श्रीशुकदेवजीसे पूछा—हे मुने ! जिस नारायणकवचसे सुरक्षित होकर देवराज इन्द्रने शत्रुओंकी चतुरंगिणी सेनाको अनायास ही जीतकर त्रैलोक्यकी राज्यलक्ष्मीका उपभोग किया; आप उस नारायणकवचको मुझे सुनाइए तथा यह भी बताइए कि, इन्द्रने नारायणकवचसे सुरक्षित होकर किस प्रकार आततायी राक्षसों पर विजय प्राप्त किया ॥ १–२ ॥

इसके बाद श्रीशुकदेवजीने कहा–देवताओंके द्वारा पुरोहितके रूपमें वरण किये जानेपर महात्मा विश्वरूपने इन्द्रके पूछनेपर जिस नारायणकवचका उपदेश किया उसे आप एकाग्र चित्त होकर सुनिए ॥ ३ ॥

नारायणमयं वर्म सन्नह्येद् भय आगते ।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि ॥ ५ ॥
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोङ्कारादीनि विन्यसेत् ।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा ॥ ६ ॥
करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया ।
प्रणवादि-यकारान्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठ-पर्वसु ॥ ७ ॥
न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि ।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत् ॥ ८ ॥

विश्वरूपने कहा–हे देवराज इन्द्र ! भयका समय उपस्थित होनेपर मनुष्य सर्वप्रथम हाथ और पैर धोकर आचमन करे, कुशकी पवित्री धारण कर, उत्तरकी ओर मुखकर बैठ जाय । फिर मौन होकर 'ॐ नमो नारायणाय' तथा 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इन दोनों मन्त्रोंसे अङ्गन्यास तथा करन्यास करे, पश्चात् नारायणकवचसे अपनी रक्षा करनी चाहिए । उसकी विधि इस प्रकार है—'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस मन्त्रके विपरीत क्रमसे यकार से आरम्भ कर, ॐ पर्यन्त, दोनों पैर, दोनों जानु (घुटना), जंघा, उदर, हृदय, वक्षःस्थल, मुख एवं शिर इस अष्टांगका न्यास करे अथवा 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस मन्त्रके ॐ कारसे प्रारम्भ कर, यकारपर्यन्त विपरीत क्रम पैरसे लेकर शिरपर्यन्त न्यास करना चाहिए ॥ ४–६ ॥ इस प्रकार सीधे अथवा विपर्यय रूपसे अङ्गन्यास कर लेनेपर द्वादशाक्षर मन्त्रसे दोनों हाथकी तर्जनीसे लेकर कनिष्ठापर्यन्त तथा दोनों अँगूठोंके दोनों पैरोंमें करन्यास करना चाहिए ॥७॥ फिर 'ॐ विष्णवे नमः' इस मन्त्रके पहले अक्षर 'ॐ' का हृदयमें, 'वि' का शिरमें, 'ष' का भौंहोंमें, 'ण' का शिखामें,

वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसन्धिषु ।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः ॥ ९ ॥
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत् ।
ॐ विष्णवे नम इति ॥ १० ॥
आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम् ।
विद्या-तेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत् ॥ ११ ॥
ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे ।
दरा-ऽरि-चर्मा-ऽसि-गदेषु-चाप-
पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ॥ १२ ॥
जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति-
र्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात् ।

'वे' का दोनों नेत्रोंमें, और 'न' का शरीरकी सब गाँठोंमें न्यास करे। तदनन्तर 'ॐ मः अस्त्राय फट्' कहकर सभी दिशाओंका बन्धन करे। न्यास करनेसे पुरुष कवचका अधिकारी हो जाता है। इन सब न्यासोंका स्वरूप ग्रन्थके प्रारम्भमें दिया जा चुका है ॥८–१०॥ न्यासके अनन्तर पुरुष अपने में षडैश्वर्य युक्त परमात्मा का ध्यान करे। पश्चात् विद्या, तेज और तपःस्वरूप इस कवचका पाठ करे ॥११॥ जो भगवान् श्रीहरि, गरुड़की पीठपर अपना पैर रखे हुए हैं और अपने आठ बाहुओंमें शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश धारण किए हुए हैं, तथा जो अष्टसिद्धियों से सर्वदा संयुक्त रहने वाले हैं, ऐसे प्रणवस्वरूप भगवान् श्रीहरि हमारी रक्षा करें ॥१२॥ मत्स्यावतार भगवान् विष्णु

स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्
त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ॥ १३ ॥
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः
पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः ।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं
दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ॥ १४ ॥
रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः
स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः ।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे
सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान् ॥ १५ ॥
मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा-
न्नारायणः पातु नरश्च हासात् ।

जलमें, जलजन्तुओं तथा वरुण के पाशसे हमारी रक्षा करें। मायासे ब्रह्मचारीका रूप धारण करनेवाले भगवान् वामन स्थलमें तथा विराट्स्वरूपधारी भगवान् त्रिविक्रम आकाशमें रक्षा करें॥१३॥ असुर-समूहोंके शत्रु वे भगवान् नृसिंह घोर जंगल, विकट स्थान तथा रणभूमि आदि भयानक स्थानोंमें मेरी रक्षा करें, जिनके भयानक अट्टहास से दिशाएँ गूँज उठी थीं तथा गर्भवती दैत्यपत्नियोंके गर्भ भी गिर गये थे ॥१४॥ अपने दाँतों से पृथ्वीका उद्धार करनेवाले यज्ञस्वरूप भगवान् वाराह मार्गमें मेरी रक्षा करें। पर्वतों के शिखरपर भगवान् परशुराम तथा प्रवासमें लक्ष्मण-सहित भगवान् श्रीराम हमारी रक्षा करें ॥१५॥ भगवान् नारायण सम्पूर्ण उग्रधर्म (मारण-मोहन-उच्चाटनादि) तथा सब प्रकारके प्रमादोंसे हमारी रक्षा करें। भगवान् नर उपहास

दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः
पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ।। १६ ।।
सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-
द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात् ।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात्
कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ।। १७ ।।
धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्
द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा ।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्तात्
बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ।। १८ ।।
द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद्
बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् ।

(निन्दा) आदि से हमारी रक्षा करें। योगेश्वर भगवान् दत्तात्रेय विघ्न से तथा त्रिगुणाधिपति भगवान् कपिल कर्मके बन्धनोंसे हमारी रक्षा करें ॥१६॥ सनत्कुमार काम देवसे तथा हयशीर्ष मार्ग में देवविग्रहों के अपमानसे हमारी रक्षा करें। देवर्षि नारद अन्य पुरुषोंके अर्चनजन्य अपराधोंसे तथा भगवान् कूर्म समस्त नरकोंसे हमारी रक्षा करें ॥१७॥ भगवान् धन्वन्तरि अपथ्य भोजनसे तथा इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनेवाले भगवान् ऋषभदेव सुख-दुःख, शीत-ताप आदि द्वन्द्वों से हमारी रक्षा करें। भगवान् यज्ञलोक के भयसे तथा बलभद्र मनुष्यकृत कष्टोंसे एवं शेष, क्रोधवश आदि सर्पगणोंके क्रोधसे हमारी रक्षा करें ॥१८॥भगवान् द्वैपायन अज्ञानसे तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और

कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु
धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥ १९ ॥
मां केशवो गदया प्रातरव्याद्
गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः ।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्ति-
र्मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥ २० ॥
देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा
सायं त्रिधामाऽवतु माधवो माम् ।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे
निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥ २१ ॥
श्रीवत्सधामाऽपररात्र ईशः
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः ।

आलस्यसे हमारी रक्षा करें। भगवान् कल्कि तत्तद्कलिजन्य पापोंसे हमारी रक्षा करें। जो धर्मकी रक्षा करनेके लिए ही अवतार धारण करते हैं ॥१९॥ भगवान् केशव अपनी गदासे प्रातःकालमें, भगवान् गोविन्द अपनी बाँसुरीसे सूर्योदयानन्तर कुछ दिन चढ़ आनेपर, दोपहर के पूर्व तीक्ष्ण शक्तिवाले भगवान् नारायण तथा चक्रधारी भगवान् विष्णु मध्याह्नमें हमारी रक्षा करें ॥ २० ॥ तीसरे पहर प्रचण्ड धनुष धारण करनेवाले भगवान् मधुकैटभ, सायंकालमें ब्रह्मा आदि त्रितय-देवोंसे युक्त भगवान् माधव हमारी रक्षा करें। रात्रिमें भगवान् हृ- तथा अर्धरात्रिमें भगवान् पद्मनाभ हमारी रक्षा करें ॥२१॥ रात्रिके पिछले प्रहरमें श्रीवत्सलाञ्छन भगवान् श्री हरि, उषाकालमें खड्गधारी

दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं प्रभाते
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥ २२ ॥
चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि
भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् ।
दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाशु
कक्षं यथा वातसखो हुताशः ॥ २३ ॥
गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे
निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियाऽसि ।
कूष्माण्ड-वैनायक-यक्ष-रक्षो-
भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयाऽरीन् ॥ २४ ॥
त्वं यातुधान-प्रमथ-प्रेत-मातृ-
पिशाच-विप्रग्रह-घोरदृष्टीन् ।

भगवान् जनार्दन, सूर्योदयके पूर्व भगवान् दामोदर एवं कालमूर्ति भगवान् विश्वेश्वर तीनों सन्धिकालोंमें हमारी रक्षा करें ॥ २२ ॥ जिसके किनारेका भाग प्रलयकालीन अग्निके समान अत्यन्त तीव्र है, जो भगवान्के द्वारा चलाये जानेपर चारों ओर घूमता रहता है ऐसे वह चक्र-सुदर्शन मेरे शत्रुओंकी सेनाको बारम्बार इस प्रकार दग्ध करता रहे जिस प्रकार वायुसे प्रेरित होनेवाला अग्नि तृण-पुंजों (समूहों) को नष्ट कर देता है ॥ २३॥ भगवान्को जिस गदा(चिनगारियों)का स्पर्श वज्रके स्पर्शके समान दुःसह है, तथा भगवान् अजितको अत्यन्त प्रिय है, ऐसी वह कौमोदकी गदा मेरे शत्रुओंको कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत तथा ग्रहोंको चूर-चूर करें ॥ २४ ॥ भगवान्के द्वारा फूँके जानेपर अत्यन्त भयावह शब्द करनेवाले हे पाञ्चजन्य, तुम मेरे शत्रुओंके हृदय को दहलाते हुए शीघ्र ही यहाँके राक्षस, प्रमथ, प्रेत, मातृगण, पिशाच

दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो
भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ॥ २५ ॥
त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य-
मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि ।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय
द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ॥ २६ ॥
यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योऽहोभ्य एव वा ॥ २७ ॥
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात् ।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ॥ २८ ॥
गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः ।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ॥ २९ ।

तथा ब्रह्मराक्षस आदि घोर दृष्टिवाले प्राणियोंको यहाँसे भगा दो ॥२५॥ हे तीक्ष्णधारवाले भगवान्‌के श्रेष्ठ असिवर ! तुम भगवान्‌की प्रेरणासे शीघ्र ही मेरे शत्रुओंकी सेनाको छिन्न-भिन्न कर दो । हे शतचन्द्रके समान चमकनेवाले भगवान्‌के ढाल ! आप मेरे पापी शत्रुओंके नेत्रोंको बन्द कर दीजिए तथा उन पापियोंको अन्धा बना दीजिए॥२६॥सूर्यादि दुष्ट ग्रहोंसे उल्कापातादि केतुओंसे, मनुष्योंसे, सर्पोंसे, भयावह दांत-वाले जन्तुओंसे तथा पापोंसे उत्पन्न होनेवाले सभी प्रकारके भय तथा मेरे कल्याणके बाधक सभी प्रकारके आश्रय भगवान्‌के नाम रूप तथा अस्त्रोंके कीर्तनेसे शीघ्र ही नष्ट हो जायें ॥२७-२८॥ बृहद् रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रोंसे जिनकी स्तुति की गयी है ऐसे छन्दोमय शरीर वाले भगवान् गरुड़ मुझे सब प्रकारकी आपत्तियों से बचायें तथा भगवान् विष्वक्सेन अपने नामोंसे हमारी रक्षा करें ॥ २९ ॥ भगवान्

सर्वापद्भ्यो हरेर्नाम-रूप-याना-ऽऽयुधानि नः ।
बुद्धीन्द्रिय-मनः-प्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः ॥ ३० ॥
यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् ।
सत्येनाऽनेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः ॥ ३१ ॥
यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम् ।
भूषणाऽऽयुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया ॥ ३२ ॥
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः ।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ॥ ३३ ॥
विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता-
दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः ।

श्रीहरिके नाम; वाहन तथा अस्त्र सम्पूर्ण आपत्तियोंसे हमारी तथा भगवान् के श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन तथा प्राणोंकी रक्षा करें ॥३०॥ यदि सत् (कारण) तथा असत् (कार्य) रूपात्मक जगत् ही भगवान्का स्वरूप है, यह शास्त्रप्रतिपादित सिद्धान्त सत्य है, तो उस सत्यके प्रभावसे ही हमारे सारे उपद्रव विनष्ट हो जायें ॥ ३१ ॥ यदि ब्रह्म और आत्माकी एकताका अनुभव करनेवाले योगियोंकी दृष्टिमें भगवान् सभी प्रकारके विकल्पोंसे रहित हैं और वे मायाके प्रभावसे भूषण, आयुध तथा लिङ्गरूप धारण करनेवाले हैं, यह शास्त्र-प्रतिपादित सिद्धान्त सत्य है तो सर्वज्ञ भगवान् श्रीहरि इस सत्यके प्रभावसे अपने सभी स्वरूपोंसे सर्वत्र हमारी रक्षा करें ॥ ३२-३३ ॥ जो भगवान् नृसिंह अपने अट्टहास से लोकका भय दूर कर देते हैं तथा अपने तेज से सभीके तेजोंको ग्रस लेते हैं, वे भगवान् नृसिंह दिशा, विदिशा,

प्रहापयँल्लोकक्षयं स्वनेन
स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ॥ ३४ ॥

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम् ।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान् ॥ ३५ ॥

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा ।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते ॥ ३६ ॥

न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत् ।
राज-दस्यु-ग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित् ॥ ३७ ॥

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः ।
योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरुधन्वनि ॥ ३८ ॥

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा ।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो तत्र द्विजक्षयः ॥ ३९ ॥

गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः ।

नीचे-ऊपर, बाहर-भीतर तथा सब ओर हमारी रक्षा करें ॥ ३४ ॥ हे देवराज इन्द्र ! मैंने यह नारायणकवच तुमको बता दिया । जिससे युक्त होकर तुम अनायास ही असुर सेनापतियोंको बिना परिश्रम ही जीत लोगे ॥३५॥ इस नारायणकवचको धारण करनेवाला पुरुष, जिसको भी अपने नेत्रोंसे देख लेता है तथा अपने चरणों से स्पर्श करता है वह पुरुष भी तत्काल समस्त भयसे मुक्त हो जाता है ॥ ३६ ॥ हे देवराज इन्द्र ! इस नारायणी विद्याको धारण करनेवाले पुरुषको राजा, डाकू, ग्रह, व्याघ्रादि तथा अन्य किसीसे भी कोई भय कभी नहीं होता ॥ ३७ ॥ कौशिकगोत्रीय किसी ब्राह्मणने इस विद्याको धारणकर योग धारणासे अपना शरीर मरुधन्वदेशमें त्याग दिया ॥३८॥ गन्धर्वराज चित्ररथ, जहाँ उस ब्राह्मणका शरीर पड़ा था उसके ऊपरसे अपने स्त्रियोंके

स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः ।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात् ॥ ४० ॥

श्रीशुक उवाच

य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः ।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात् ॥ ४१ ॥
एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः ।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान् ॥ ४२ ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे षष्ठस्कन्धेऽष्टमेऽध्याये
नारायणकवचं समाप्तम् ।

साथ विमानपर बैठकर जा रहे थे ॥ ३९ ॥ वहाँ आते ही वे नीचेकी ओर सिर कर विमान-सहित आकाशसे पृथ्वीपर गिर पड़े । इस घटना से उनके आश्चर्यकी सीमा न रही । जब बालखिल्य महर्षियोंने बताया कि यह नारायणकवच धारण करनेका प्रभाव है, तो उन्होंने उस ब्राह्मणकी उन अस्थियोंको ले जाकर पश्चिम वाहिनी सरस्वतीमें प्रवाहित कर दिया और वे स्नान करके अपने लोकको चले गये ॥ ४० ॥

फिर शुकदेवजीने कहा—हे परीक्षित् ! जो लोग इस नारायण-कवचको समयसे सुनते हैं तथा आदर से इसे धारण करते हैं, वे भय से मुक्त हो जाते हैं तथा सभी प्राणी उन्हें नमस्कार करते हैं ॥४१॥ हे परीक्षित् ! इन्द्रने विश्वरूपसे इस वैष्णवी विद्याको प्राप्तकर युद्धमें सभी असुरोंको जीत लिया और वे त्रैलोक्यकी लक्ष्मीका उपभोग करने लगे ॥ ४२ ॥

इस प्रकार देवरिया-मण्डलान्तर्गत 'भभौली राज्य' (सम्प्रति वाराणसी) निवासि :सरयूपारीण-पण्डित-श्रीसन्तशरणमिश्रात्मज-श्रीशिवदत्तमिश्र-

शास्त्रिकृत- द्रौपदी' नाम्नि भाषाटीकामें श्रीमद्भागवत-
महापुराणके छठे स्कन्धके अष्टम अध्यायमें कहा
हुआ नारायणकवच समाप्त ।

●

स्वतन्त्रभारत प्रेस, वाराणसी।